Roll No. .....

(12/24)

19225

M. A. EXAMINATION

(For Regular Batch 2022 & Onwards)

(Third Semester)

HINDI

MA/HIN/3/DSC9

प्रेमचन्द : एक विशेष अध्ययन

Time : Three Hours *Maximum Marks :* 70

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×5=10

   (i) 'गबन' उपन्यास की विषय-वस्तु को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए ।

   (ii) उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के किन्हीं पाँच उपन्यासों के नाम बताइए ।

(iii) 'वंशीधर' के चरित्र की कोई **तीन** विशेषताएँ बताइए ।

(iv) 'ईदगाह' कहानी में हामिद के चरित्र को स्पष्ट कीजिए ।

(v) 'उपन्यास' निबन्ध के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×4=60

(i) 'गबन' उपन्यास में निहित समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'गबन' उपन्यास के आधार पर रमानाथ की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

(ii) 'कफ़न' कहानी के आधार पर घीसू की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'पंच परमेश्वर' कहानी के कथानक की समीक्षा कीजिए ।

(iii) प्रेमचन्द की निबन्ध कला पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'शिक्षा का नया आदर्श' शीर्षक के आधार पर वर्तमान शिक्षा प्रणाली के कुपरिणामों की विवेचना कीजिए ।

(iv) निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×3=15

(क) बालकों के मुँह से गम्भीर बातें सुनकर जैसे हमें हँसी आ जाती है, उसी तरह जालपा के मुँह से यह लालसा से भरी हुई बातों सुनकर राया और वासन्ती अपनी हँसी न रोक सकीं। हाँ, शहजादी को हँसी न आयी । यह आभूषण-लालसा उसके लिए हँसने की बात नहीं, रोने की बात थी । कृत्रिम सहानुभूति दिखाती हुई बोली–सब न जाने कहाँ के जंगली हैं कि सब चीजें तो लाये, चन्द्रहार न लाये, जो सब गहनों का राजा है । लाला अभी आते हैं तो पूछती हूँ, कि तुमने यह कहाँ की रीति निकाली है–ऐसा अनर्थ भी कोई करता है ।

अथवा

मैं जानता हूँ, तुम्हारी आमदनी अच्छी है, पर भविष्य के भरोसे पर और चाहे जो काम करो लेकिन कर्ज कभी मत लो । गहनों का मरज न जाने इस दरिद्र देश में कैसे फैल गया । जिन लोगों को भोजन का ठिकाना नहीं, वे भी गहनों के पीछे प्राण देते हैं । हर साल अरबों

रुपये केवल सोना-चाँदी खरीदने में व्यय हो जाते हैं । संसार के और किसी देश में इन धातुओं की इतनी खपत नहीं । तो बात क्या है ? उन्नत देशों में ध न व्यापार में लगता है जिससे लोगों की परवरिश होती है, और धन बढ़ता है । यहाँ उन शृंगार में खर्च होता है, उसमें उन्नति और उपकार की जो दो महान शक्तियाँ हैं, उन दोनों ही का अन्त हो जाता है ।

(ख) जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गन्ध तक न थी । अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी इतनी ही तत्परता से गले लगाता है । वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया । नहीं, इन अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक क्षण प्रकाश से चमक रहा था ।

अथवा

इस निर्णय की कहीं अपील न थी । मजूर की ज़मानत कौन करता ? कहीं

शरण न थी, भागकर कहाँ जाता ? दूसरे दिन से उसने विप्रजी के यहाँ काम करना शुरू कर दिया । सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र भर के लिए गुलामी की बेड़ी पैरों में डालनी पड़ी । उस अभागे को अब अगर किसी विचार से संतोष होता था, तो वह यह था कि वह मेरे पूर्वजन्म का संस्कार है । स्त्री को वे काम करने पड़ते थे, जो उसने कभी न किए थे । बच्चे दाने को तरसते थे, लेकिन शंकर चुपचाप देखने के सिवा और कुछ न कर सकता था ।

(ग) आख्यायिका का प्रधान धर्म मनोरंजन है, पर साहित्यिक मनोरंजन वह है, जिससे हमारी कोमल और पवित्र भावनाओं को प्रोत्साहन मिले। हमें सत्य, निःस्वार्थ सेवा, न्याय आदि देवत्व के जो अंश हैं, वे जागृत हों । वास्तव में मानवीय आत्मा की यह वह चेष्टा है, जो उसके मन में अपने आपको पूर्ण रूप में देखने की होती है । अभिव्यक्ति मानव हृदय का स्वाभाविक गुण है । मनुष्य जिस समाज में रहता है, उसमें मिलकर रहता है, जिन मनोभावों से वह अपने मेल के क्षेत्र को

बढ़ा सकता है, अर्थात् जीवन के अनंत प्रवाह में सम्मिलित हो सकता है, वही सत्य है ।

अथवा

बुरे आदमी को भला समझकर, उससे प्रेम और आदर का व्यवहार करके उसको अच्छा बना देने की जितनी सम्भावना है, उतनी उससे घृणा करके, उसका बहिष्कार करके नहीं । मनुष्य में जो कुछ सुन्दर है, विशाल है आदरणीय है, आनन्दप्रद है, साहित्य उसी की मूर्ति है । उसकी गोद में उन्हें आश्रय मिलना चाहिए जो निराश्रय हैं, जो पतित हैं, जो अनावृत्त हैं । माता उस बालक से अधिक स्नेह करती है जो दुर्बल है, बुद्धिहीन है, सरल है, सपूत बेटे पर वह गर्व करती है । उसका हृदय दुखी होता है, कपूतों ही के लिए । कपूतों ही में वह अपने मातृ-वात्सल्य को टिका पाती है ।